Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-1, June-2018

गढ़वाल हिमालयी देववास्तु (मंदिर स्थापत्य) की द्वार भूषा का अध्ययन (पलेठी एवं आदिबदरी मंदिर समूहों के विशेष संदर्भ में)

सपना रावत & नागेन्द्र सिंह रावत
इतिहास, प्राचीन भारतीय इतिहास,संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय
श्रीनगर (गढ़वाल) उत्तराखंड
nagendra.rawat957@gmail.com

सारांश

सुविशाल हिमालय के अन्य क्षेत्रों की भांति उत्तराखंड के गढ़वाल संभाग में सहत्रों प्राचीन देवालयों का निर्माण किया गया,जिनमें से कतिपय देवालय गुप्तोत्तर कालीन हैं इन देवालयों में स्थापित देव मूर्ति तथा देवालय भूषा को प्राचीन भारतीय शिल्पग्रंथों तथा अन्य ग्रंथों के अनुरूप बनाया गया है,प्रस्तुत शोध पत्र में गढ़वाल में स्थित दो देवालय समूहों पलेठी मंदिर तथा आदिबदरी मंदिर समूह के द्वार भूषा की विस्तृत जानकारी दी गयी है,जिसमें देवालयों के द्वार निर्माण, आकर,माप तथा द्वार अंगों (उदुम्बर पार्श्वशतम्भ,एवम् उत्तरांग)पर अंकित अभिप्रायों (प्राकृतिक,ज्यामितिक व देव मूर्तियों आदि) के विषय में विशेष विवरण प्रस्तुत कर दोनों देवालयों की द्वार निर्माण व द्वार भूषा की परस्पर तुलना की गई है, जिससे तथ्य सिद्ध होता है की भारतीय उप महाद्वीप के अन्य क्षेत्रों की भांति हिमालय के इस दुर्गम क्षेत्र में भी कुशल शिल्पियों को आश्रय प्राप्त था, जिन्होंने विभिन्न शिल्पशास्त्रों में उल्लिखित नियमावाली तथा अवधारणाओं को मध्यनजर रखते हुए इस क्षेत्र में भी सुंदर देवालयों का निर्माण किया तथा उनकी भूषा के लिए भी विभिन्न अभिप्रायों का अंकन किया गया.

प्रमुख शब्द : गढ़वाल, देवालय, द्वारभूषा, अभिप्राय

परिचय

भारतीय धर्म संस्कृति,कला एवं पुरातत्व के इतिहास में देववास्तु (मंदिर स्थापत्य) का विशेष महत्व है चूँकि प्राचीन काल से ही मंदिर सदैव ही धर्म, संस्कृति तथा कला के मूल केंद्र रहे हैं. अतैव दुसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि, मंदिर स्थापत्य किसी कालखंड विशेष की धर्म,संस्कृति तथा कला के संवाहक एवं जीवंत उदहारण हैं इनके गहन अध्ययन से तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिति का आंकलन किया जा सकता है. मंदिर स्थापत्य में अनेक विशेष समाहित हैं जिनका भी सामरिक महत्व होता है उदहारणतार्थ - मंदिर में स्थापित देव मूर्तियाँ, मंदिर स्थापत्य की भूषा तथा सबसे महत्वपूर्ण मंदिर का स्थापत्य एवं उसके विभिन्न अंग. उल्लेखनीय है कि, हिन्दू संस्कृति में मंदिर स्थापत्य को देवपुरुष तुल्य (वास्तुपुरुष) माना गया है[1] जिसके विभिन्न अंग भी समरूपता से

निर्धारित किये गए हैं अर्थात मंदिर स्थापत्य के अनेक पक्षों की भांति इसके विभिन्न अंगों का भी परम महत्व है. मंदिर के विभिन्न अंगो में द्वार को अपेक्षाकृत अधिक महत्व दिया जाता है, चूँकि हिन्दू प्रसाद रचना में गर्भगृह का द्वार प्रासादपुरुष का मुख (मुखद्वार) माना गया है. इसका प्रमुख कारण यह है कि, एक ओर जहाँ यह मूल प्रतिमा के अविर्भाव का स्थान है वहीं दूसरी ओर भक्तों का प्रवेश मार्ग भी है[2] फलत: विभिन्न प्राचीन भारतीय शिल्पग्रंथों में मन्दिर के द्वार निर्माण की दिशा से लेकर माप तथा मानक निर्धारित किये गये हैं. जिनके अनुपालन के अभाव में सम्पूर्ण मंदिर स्थापत्य के निर्माण का मूल ध्येय प्रभावित हो जाता है.

सामान्यत: मंदिर के द्वार को 'द्वारशाखा' या 'द्वारशोभा' भी कहा जाता है, हालाँकि द्रविड शैली के मंदिरों में इसे गोपुरम की संज्ञा प्रदान की गयी.[3] मंदिरों में द्वार निर्माण के अतिरिक्त द्वार की भूषा के लिए भी प्राचीन शिल्पग्रन्थों में विस्तार से चर्चा की गयी है, जिसके प्रयोग के प्रमाण विभिन्न मंदिरों की द्वार-शाखाओं से प्राप्त होते हैं. किन्तु साथ ही यह भी ध्यान रखना प्रयोजनीय है कि प्राचीन शिल्पशास्त्रों तथा अन्य ग्रंथों में उल्लिखित नियमावली तथा अवधारणाओं के अनुपालन के साथ कतिपय मंदिरों में स्थानीय आस्था-विश्वास का प्रभाव देखने को भी मिलता है. इसी सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध पत्र भारतवर्ष में गढ़वाल हिमालय के दुर्गम क्षेत्रों में स्थित पलेठी मंदिर समूह तथा आदिबदरी मंदिर समूह की द्वार भूषा का विस्तृत अध्यन किया गया है.

शोध क्षेत्र एवं अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोधपत्र में गढ़वाल हिमालय के मुख्यत: दो मंदिर समूह में निर्मित देवालयों की द्वार भूषा का विस्तृत अध्ययन किया गया है, प्रथम पलेठी मंदिर समूह,यह देवालय समूह उत्तराखंड राज्य के टिहरी जनपद में भागीरथी के बायीं और पलेठी नामक ग्राम के समीप ३०°१२'४३.०२'उ० अक्षांश तथा ७८°३७'३७.७२' पूर्वी देशांतर पर स्तिथ है तथा दूसरा मंदिर समूह आदिबदरी मंदिर समूह है यह उत्तराखंड के जनपद चमोली में कर्णप्रयाग-गैरसैण मार्ग पर ३०°०९'४०.८५' अक्षांश तथा ७९°१३'३०.२१' पूर्वी देशांतर पर स्थित है, (चित्र -१)

प्रस्तुत शोधपत्र को सम्पूर्ण रूप देने के लिए उपलब्ध साहित्य/प्रकाशित सामग्री का अध्ययन किया गया तथा विषय के विशेषज्ञों से साक्षात्कार भी किया गया जिससे द्वार भूषा में प्रयुक्त शास्त्रीय एवं स्थानीय अलंकरणों का अंतर निश्चित किया जा सके तथा साथ ही कतिपय अभिप्रायों के विषय में गहन जानकारी के लिए साक्षात्कार लिए गये. इसके अलावा क्षेत्र भ्रमण कर मंदिर समूहों का अवलोकन कर आवश्यक माप-जोक लिए गये तथा साथ ही छायाचित्र संकलित किये गये जो शोधपत्र को प्रमाणिकता प्रदान करते है

चित्र संख्या १- उत्तराखण्ड में पलेठी और आदिबदरी मंदिर समूहों की स्थिति

गढ़वाल हिमालय के मंदिर स्थापत्य में प्रमुख अलंकृत द्वार :-

पुर्वोलिखित किया जा चुका है कि, सुविख्यात हिमालय के इस भाग को देवभूमि के नाम से भी परिभाषित किया जाता है जिसका प्रमुख कारण इस क्षेत्र में स्थित सहस्रों देवालयों तथा देवस्थान हैं. अवश्य गढ़वाल क्षेत्र में स्थित समस्त देवालयों तथा देवस्थानों की सटीक गणना करना कदाचित संभव नहीं हैं किन्तु इनमे से प्रमुख एतिहासिक देवालयों को अवश्य चिन्हित किया जा सकता है जोकि आज भी अपने स्वरुप में खड़े हैं. इन ऐतिहासिक देवालयों में पलेठी मंदिर समूह, आदिबदरी मंदिर समूह, नारायण कोटि मंदिर समूह, देवलकोट मंदिर समूह, सुमाडी मंदिर समूह, रानीहाट, केदारनाथ, तुंगनाथ, बुढाकेदार, बजिंगा मंदिर, सत्यनारायण एवं वीर भद्र, औंकारेश्वर आदि प्रमुख हैं. अत: विषय की विशालता के कारण प्रस्तुत शोध पत्र को केवल पलेठी मंदिर समूह व आदिबदरी मंदिर समूह के देवालयों की द्वार के अध्ययन तक ही सिमित किया गया है.

चयनित द्वार शाखाओं के अध्ययन से पूर्व द्वार के प्रमुख भागो के विषय में जानना आवश्यक है. सामान्यत: द्वार के तीन प्रमुख भाग होते हैं[४] जैस- उदुम्बर, द्वार शाखा तथा उत्तरांग. उदुम्बर का तात्पर्य देहली से है जो द्वार शाखाओं को आधार प्रदान करती है. द्वार शाखाओं को सामान्य भाषा में पार्श्व स्तम्भ कहा जा सकता है. जिन पर उत्तरांग टिका होता है. द्वार शाखा के बाद उत्तरांग द्वार का प्रमुख भाग होता है. इन तीन प्रमुख अंगो के अलावा चंद्रशिला, पैद्य तथा ललाट बिम्ब भी द्वार के अंग होते हैं. हालांकि चंद्रशिला सभी देवालयों में नहीं मिलती है, किन्तु पैद्य तथा ललाट बिम्ब प्रत्येक द्वार में अनिवार्य रूप से मिलते है. चंद्रशिला उदुम्बुर से भी नीचे एक समतल शिलापट्ट होता है, जिस पर प्रमुखत: अर्धचंद्र एवं शंख की आकृति बनी होती है. इसी प्रकार पैद्य द्वार शाखा का निचला भाग होता है. जिस पर मुख्यत: नदी देवताओं- गंगा, यमुना तथा द्वारपालों की मूर्ति बनी होती है, इसके अलावा ललाट द्वार का सर्वोपरी भाग होता है, जिसके मध्य (ललाट बिम्ब) में नियमानुसार उसी देवता का सूक्ष्म रूप अथवा देवता के वाहन का अंकन होता है, जिस देवता विशेष को वह मन्दिर समर्पित है.[५]

पलेठी मंदिर समूह के प्राप्त अलंकृत द्वार:-

यह मंदिर समूह जनपद टिहरी गढ़वाल के भागीरथी नदी के बाएं पार्श्व में स्थित पलेठी नामक गाँव के पास है, यहाँ पर वर्तमान में ४ मंदिरों के साक्ष्य है, दो मंदिर क्षतिग्रस्त हो चुके है. शेष दो मंदिर सुरक्षित है दोनों मंदिर फांसणा शैली में निर्मित है, स्थापत्तीय विशेषता तथा अन्य साक्ष्यों के आधार पर इनका कालक्रम ६७५-७०० ई. निर्धारित किया गया है.[६] सभी दृष्टव्य मंदिरों में से सर्वाधिक विशाल और अलंकृत द्वार सूर्य मंदिर का है, जो पूर्वाभिमुख है. उल्लेखनीय है कि, सूर्य मंदिर का द्वार “T” आकार का है, इसी प्रकार का द्वार नचना व् देवगढ मंदिरों में भी है, (चित्र २) जिसके आधार पर भी पलेठी मंदिर की प्राचीनता गुप्तोत्तर काल मानी जाती है. इसके अलावा यह भी ध्यान देने योग्य है कि. पलेठी सूर्य मंदिर के द्वार कि माप शिल्पशास्त्रों के अनुरूप (१:२) २६ १/२*५३ इंच है, जैसा कि अग्निपुराण में उल्लेख किया गया है.

‘विस्तराद द्विगुणं द्वारं कथिथ सुसोभ्नाम’

अर्थात मंदिर के द्वार की जीतनी चौड़ाई हो उसके दुगुनी उसकी ऊंचाई रखनी चाहिए,और द्वार को बहुत ही सुन्दर और सोभायमान बनाना चाहिए.[७]

चित्र संख्या २ -पलेठी सूर्य मंदिर का अलंकृत द्वार

पलेठी सूर्य मंदिर की द्वार भूषा:-

पलेठी स्थित सूर्य मंदिर का द्वार पूर्वाभिमुख है, इसमें चन्द्र शिला का अभाव है, तथा इसका उदुम्बर(२४*१३० सेमी)भी नितांत सादा है. द्वारशाखा के चतुर्थांश पर पैद्य बना है, प्रथम दो द्वारशाखाओं की माप पर बने पैद्य पर दोनों और क्षत्रधारिणी सेविकाओं सहित एक हाथ में पद्मपुष्प लिए मकर वाहिनी गंगा और कुर्म्वाहिनी यमुना का अंकन है. देवालय द्वार पर नदी देवताओं के अंकन का विधान शिल्पशास्त्रों में उल्लिखित है. जिसकी अवधारणा यह है कि. इन दोनों नदी देवताओं के मध्य से प्रवेश करने वाले श्रद्धालु इनके जल से पवित्र हो जाते है.[८] पेद्या के ऊपर पार्श्वस्तंभ मूलतः त्रिशाखा युक्त है, जिनमें पत्रशाखा,पुष्पशाखा तथा श्रीवृक्ष शाखा क्रमशः अन्दर से बाहर की और बनाई गयी है, पत्रशाखा की चौड़ाई ११ सेमी है. जिसमे १८ पत्रों का अंकन है, पत्रशाखा में ही द्वार के ललाट बिम्ब पर एक युगल युग्म का अंकन किया गया है. पुष्प शाखा में ५२ पुष्पों का अंकन मिलता है, इस शाखा की चौड़ाई ६ सेमी है, इस शाखा के बाद ३ सेमी का रिक्त अन्तराल है, तत्पश्चात श्रीवृक्ष शाखा है. जिसमे कुल २० श्रीवृक्षों का अंकन किया गया है. इस शाखा की चौड़ाई ९ सेमी है. श्रीवृक्ष शाखा के बाद अंत में २४४ मनकों की एक श्रंखला (मणीबंध) पर्शवस्तम्भ की भूषा को सीमांकित करती है. (देखें चित्र संख्या २)

उपरोक्त मूल तीन शाखाओं के अतिरिक्त दो अन्य स्वतंत्र शाखाएँ अथवा पट्टिकाएं भी द्वार भूषा में प्रयुक्त हुई हैं. जिनमे प्रथम पट्टिका अथवा शाखा सिरदल के रूप में बनी हंस एवं लघु गवाक्ष शाखा हैं. जिसमे ४ हंस तथा ३ तीन लघु गवाक्ष बनाए गए हैं. इस शाखा की माप ९ * १२ सेमी है. इस शाखा के दोनों सिरों के नीचे दो कीचक/यक्षों का अंकन इस प्रकार किया गया है. मानो वह इस हंस शाखा का भार लिए हो, कीचक/ यक्षों की माप

१० * १२ सेमी है. इसके अलावा दूसरी स्वतंत्र शाखा ग्रासमुख शाखा है. जो द्वार की उपरी भाग की भूषा का सीमांकन करती है. इस शाखा में ७ ग्रासमुख/कीर्तिमुख तथा ६ पद्म पुष्प अंकित हैं. इसके अलावा ग्रासमुख से निकलते हुए मनकों की मालाएं भी प्रदर्शित की गयी हैं. जो पद्म पुष्पों तक दिखाई गयी हैं. इस शाखा की माप १५६ * ११ सेमी है. इसके अलवा द्वार पर दो ग्रासमुख/कीर्तिमुख का स्वतंत्र अंकन किया गया है. जो की पार्श्वस्तम्भ के बाहरी भाग पर मनकों की श्रृंखला के बाद ९ * ९ सेमी माप के कोष्ठों में बने हैं, डा. यशवंत सिंह के शब्दों में 'लघु कोष्ठों से झांकते विश्फटिक नेत्र वाले दो ग्रासमुख इस प्रकार अंकित किये गए हैं. मानो अमंगल का अपसारण कर रहे हों.'[९] (चित्र संख्या ३)

चित्र संख्या ३- पलेठी सूर्य मंदिर के द्वार का ऊपरी भाग

पलेठी के अन्य मंदिरों की द्वार भूषा :-

पुर्वोलिखित है कि, इस परिसर में चार मंदिरों के साक्ष्य हैं, जिनमे मात्र सूर्य मंदिर के अलावा शिव मंदिर पूर्णत: सुरक्षित है. जो की सूर्य मंदिर के ठीक पीछे स्थित है. यह मंदिर भी फांसणा शैली में निर्मित है. इस मंदिर के शिखर पर आकाश लिंग तथा गर्भगृह में स्थापित एक मुखी शिवलिंग की उपस्थिति इसके शिवमंदिर होने की पुष्टि करते हैं. इस मंदिर का द्वार भी त्रिशाखा युक्त पूर्वाभिमुख है. तथा द्वार का उदुम्बर भी सूर्य मंदिर की भाँति अलंकरणविहीन नितांत सादा है. साथ ही इसके पार्श्वस्तम्भों के पैद्य भी अलंकरण विहीन हैं. पार्श्वस्तम्भों की त्रिशाखाएं अंदर से बाहर की ओर क्रमश: कल्पवली शाखा, पुष्प शाखा तथा श्रीवृक्ष शाखा हैं, कल्पवली शाखा को एक देवी अथवा यक्षी की नाभि से संवर्धित दिखाया गया है, जिसे देवी/ यक्षी ने अपने एक हाथ से पकड़ा हुआ है. (चित्र ४)

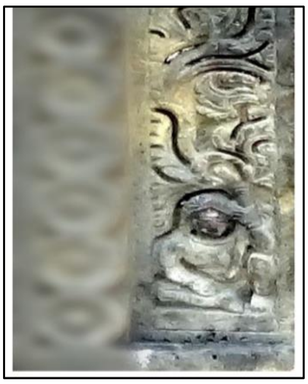

चित्र संख्या ४-शिव मंदिर पलेठी की द्वार भूषा पर अंकित कल्पवल्ली पकडे हुए यक्षी

उल्लेखनीय है कि, इस प्रकार के अलंकरण गढ़वाल के गोपेश्वर नगर में स्थित चंडी मंदिर के द्वार शाखा पर भी मिलता है. तथा भारतीय परिप्रेक्ष्य में नाचना व देवगढ के गुप्तकालीन मंदिरों में भी इस प्रकार की यक्षी युक्त कल्पवल्ली द्वार शाखा बनायीं गयी है.[१०] इस शाखा के ऊपरी भाग के मध्य में एक कीर्तिमुख का अंकन भी मिलता है, जो द्वार के मध्य में प्रदर्शित होता है, दूसरी शाखा पद्मपुष्प शाखा है, जिसमे ४६ पुष्प दर्शाए गये हैं, इन दोनों शाखाओं के बाद सामान्य अंतराल देने के उपरांत श्रीवृक्ष शाखा है, जिसमें १६ श्रीवृक्षों का अंकन किया गया है, सूर्य मंदिर की भांति पार्श्वस्तम्भ की द्वार शाखाओं का सीमांकन इसमें भी मनकों की श्रृंखला से किया गया है. जिनकी संख्या २६० है, इन तीन मूल शाखाओं के अलावा द्वार के ऊपरी भाग का सीमांकन एक स्वतंत्र ग्रासमुख शाखा करती है, जिसमे ५ ग्रासमुख तथा ६ पद्म पुष्प हैं. (चित्र ५ अ)

शिव मंदिर के दांयी ओर एक भग्न मंदिर है. जिसका जंघा भाग व द्वार सुरक्षित है. इस मंदिर में एक सूर्य मूर्ति तथा एक पार्वती देवी (?) की मूर्ति रखी गयी है. इसलिए यह निर्दिष्ट करना कठिन है कि. यह मंदिर किस देवता या देवी को समर्पित रहा होगा, इस मंदिर का द्वार भी त्रिशाखा युक्त पूर्वाभिमुख है, द्वार का उदुम्बर सादा है. तथा पार्श्वस्तम्भों का पैद्य भाग भी अलंकरण विहीन है. पार्श्वस्तम्भों में अंदर से बाहर क्रमश: तीन शाखाएं पत्र शाखा, पुष्पशाखा तथा पत्रपुष्पशाखा है. पत्रशाखा के बाद पुष्पशाखा में १८ पद्म पुष्प हैं. तथा सामान्य अंतराल के बाद पत्रपुष्प शाखा है. पत्र पुष्पशाखा के ऊपरी भाग के मध्य में एक कीर्तिमुख का अंकन मिलता है. (चित्र ५ ब)

चित्र संख्या ५- (अ)पलेठी स्थित शिव मंदिर का दायां भाग (ब) अन्य मंदिर की द्वार भूषा.

इसके अलावा शिव मंदिर की बांयी और भी एक अन्य भव्य मंदिर है. जिसके गर्भ गृह में सूर्यमूर्ति स्थापित है. किन्तु यह मंदिर अधिकांश रूप से क्षतिग्रस्त हो चुका है, तथा इसका द्वार भाग भी उपलब्ध नहीं है.

आदिबदरी समूह के देवालयों की द्वार भूषा :-

आदिबदरी मंदिर समूह उत्तराखंड के जनपद चमोली में गैरसैंण राजमार्ग पर स्थित हैं, यह तीर्थ पांच बदरियों में से सबसे प्राचीन माना जाता है, जिस कारण इसको आदि अर्थात प्राचीन बद्री की संज्ञा दी गयी है. अन्य ४ बद्री- विशाल बद्री, योगध्यान बदरी, भविष्य बदरी, वृद्ध बदरी हैं, सम्बंधित साहित्य से पता चलता है कि कभी यहाँ पर १६ मंदिरों का समूह था, किन्तु वर्तमान में मात्र १४ मंदिर ही शेष हैं. इसमें से मूल मंदिर बद्रीनारायण का है. विशेषज्ञों के अनुसार यह मंदिर कार्तिकेयपुर राज के समय बने जिसका कालक्रम अनुमानत: ११-१२ सदी निर्धारित किया गया है. उल्लेखनीय है कि, यहाँ पर ८ देवालय पश्चिमाभिमुख, ४ मंदिर दक्षिणाभिमुख तथा २ मंदिर पूर्वाभिमुख हैं, इन सभी १४ मंदिरों में से केवल ८ मंदिरों के द्वार पर अलंकरण मिलता है, जिनका विवरण निम्नवत है.

१ **बद्रीनायारण मंदिर -** बद्रीनारायण मंदिर इस मंदिर समूह का मुख्य मंदिर है, जिसमें स्थानक विष्णु की मूर्ति स्थापित है, इस मंदिर में मंडप और गर्भ गृह के मध्य अंतराल भी है, अत: मंडप एवं गर्भ गृह के द्वार अलग-अलग हैं, मंडप का द्वार ६८ * १३६सेमी त्रिशाखा युक्त है, प्रथम दो शाखाएं पूर्णतः सादी हैं, तथा तीसरी शाखा पर किंचित अल्प अलंकरण है, इसमें ललाट बिम्ब पर गणेश का अंकन किया गया है. (देखें चित्र १० अ) द्वार के पैद्य भाग में सामान्य ज्यामितीय अलंकरण हैं, द्वार का उदुम्बर १६ * ३२ सेमी आकार का है, जिस पर दो ग्रासमुख बने हैं. वर्तमान में उदुम्बर बहुत घिस चुका है. उदुम्बर के नीचे चंद्रशिला बनायी गयी है, जिसमे नियमानुसार अर्धचंद्र के दोनों और शंख की आकृति बनाई गयी है, बद्रीनारायण मंदिर के गर्भ गृह के द्वार अलंकरण के विषय में डा.कठोच ने भी लिखा है कि 'इस द्वार में पत्रलता संयुक्त मध्य शाखा, अधोभाग पर प्रतिहार तथा द्वार के ललाट बिम्ब पर लक्ष्मी सहित विष्णु का अंकन है'. [११]

२ **गणेश मंदिर की द्वार भूषा :-** आदिबदरी मंदिर समूह में गणेश मंदिर एक पश्चिमाभिमुख बड़ा मंदिर है, जो कि विष्णु मन्दिर के पीछे है, वर्तमान में गर्भगृह में विनायक की मूर्ती होने के कारण इसे गणेश मंदिर की संज्ञा दी गयी है. आदिबदरी मंदिर समूह १४ मंदिरों में से गणेश मंदिर की द्वारभूषा विशेष उल्लेखनीय है, इस मंदिर के द्वार की माप ४५ * ९० सेमी है, द्वार के सभी भाग (चंद्रशिला से लेकर उत्तरांग तक) अलंकृत है. द्वार की चंद्रशिला पर नियानुसार अर्धचन्द्र के साथ शंखों का अंकन है. जिसके ऊपर उदुम्बर है. (चित्र ६)

चित्र संख्या ६- आदिबदरी मंदिर समूह के गणेश मंदिर के द्वार तल पर बनी चंद्रशिला

उदुम्बर पर दो कीर्तिमुखों का सुन्दर अलंकरण किया गया है, जिनके पास क्रमश: दायें से बाएं गणेश ओर कार्तिकेय को दर्शाया गया है. (देखें चित्र ११ ब) इस मंदिर के द्वार का पैद्य

भाग विशेष उल्लेखनीय है, जिसमें सबसे बाहर शैव और वैष्णव द्वारपालों का अंकन है, इसके साथ ही अन्दर की शाखा पर कलशधारिणी मकरवाहिनी गंगा तथा कुर्मवाहिनी यमुना की त्रिभंग मुद्रा का अंकन भी दर्शनीय है, साथ ही द्वार के दायें पार्श्वस्तम्भ पर शैव द्वारपाल का अंकन है, जो दायें हाथ में कपाल तथा बाएं हाथ में खटबांग लिए है. इसी प्रकार दूसरी ओर वैष्णव द्वारपाल को दायें हाथ में गदा व बाएं हाथ को कटि पर टिका हुआ दर्शाया गया है. (चित्र ७)

चित्र संख्या ७- गणेश मंदिर की द्वार शाखा का अंलकृत पेद्य भाग.

द्वार के पार्श्वस्तम्भ त्रिशाखा (पत्रवल्लीशाखा,देवमूर्तिशाखा तथा गन्धर्वशाखा) युक्त है, द्वार की प्रथम शाखा को सामान्यत: पत्रवल्लीशाखा के रूप में पहचाना गया है, (साक्षात्कार- डा.य०सि० कठोच ,२०१७)किन्तु यह कदाचित लहर सादृश्य भी है, ओर उल्लेखनीय है कि, भारतीय देववास्तु की भूषा के लिए लहर एक प्रचलित अभिप्राय रहा है.[१२] प्रथम शाखा के बाद देवमूर्तिशाखा है, जिसमे पार्श्वस्तम्भ में ३-३ देव आकृतियों का अंकन है, तथा उत्तरांग पर कीर्तिमुख श्रृंखला है, द्वार के सबसे बाह्य भाग पर दोनों पार्श्वस्तम्भ में सुंदर कोष्ठकों के अन्दर अतिभंग मुद्रा में नृत्यरत गन्धर्वों का अंकन किया गया है. (चित्र ८) तथा उत्तरांग पर स्थानक मुद्रा में नवग्रहों (दायें से बाएं की ओर क्रमश: सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, एवं केतु)का अंकन है, ललाट बिम्ब में लकुलीश तथा गणेश के सूक्ष्म रूप का अंकन मिलता है, ललाट के दोनों ओर किनारों पर २ देव आकृतियां प्रदशित की गयी है, जिनमें से दायें पार्श्व पर गणेश का अंकन है, तथा बाएं पार्श्व में सम्भवतः कार्तिकेय को स्थान दिया गया है. (देखें चित्र १० ब)

चित्र संख्या ८- आदिबदरी मंदिर समूह के गणेश मंदिर की सम्पूर्ण द्वार भूषा.

३ गोरीशंकर मंदिर की द्वार भूषा -यह बद्रीनारायण मंदिर के बायीं और है, मंदिर का द्वार त्रिशाखा युक्त पश्चिमाभिमुख है द्वार के उदुम्बर में २ ग्रास मुखों के साथ-साथ सिंह आकृतियों का भी अंकन है, जो बाहर की ओर मुहं किये हुए बैठी मुद्रा में है. (देखें चित्र११ स) द्वार के पैद्य भाग में आयुधधारी शैव और वैष्णव द्वारपाल अंकित है, इसमें नदी देवताओं की अनुपस्थिति मिलती है, द्वार की दो शाखाएं नितांत सादी है, केवल तृतीय शाखा पर अतिभंग मुद्रा में ६ नृत्यरत गन्धर्वो का अंकन है, द्वारोतरंग पर नव ग्रह पट्टिका है, जिसमें दायें से बाएं क्रमश: नो ग्रह सूर्य,चंद्र,मगल,बुध, वृहष्पति, शुक्र, शनि तथ राहु , केतु का बैठी मुद्रा में अंकन है. ललाट बिम्ब पर गणेश का अंकन मिलता है.(देखे चित्र १०स) इसके अलावा द्वार के सबसे निचले भाग में नियमानुसार चंद्रशिला भी स्थापित की गयी है, जिसके दोनों ओर शंख बने हुए है.

४ महिषमर्दिनी मंदिर की द्वार भूषा :- आदिबदरी मंदिर समूह के सबसे पिछले भाग में स्थित यह मंदिर पश्चिमाभिमुख है, जिसके गर्भगृह में महिसाषासुरमर्दनी की मूर्ति स्थापित है, इस मंदिर का प्रवेश द्वार ३३ * ६६ सेमी माप का है, जिसमें त्रिशाखायें है प्रथम २ शाखाएं सादी है, तथा बाहय शाखा पर भी सामान्य लहर अथवा पत्रवल्लियाँ अंकित है. द्वार के ललाट बिम्ब पर गणेश का अंकन है. (देखे चित्र१० व) तथा पैद्य भाग पर कलशधारिणी गंगा यमुना का अंकन हैं. इस मंदिर के द्वार का अत्यंत विलक्षण भाग इसका उदुम्बर है, जिसमे केवल एक कीर्तिमुख बना है, जिसके दोनों ओर सिंह के मुख में हाथ डाले एक पुरुष की आकृति बनाई गयी है. (देखे चित्र ११ व) यशवंत सिंह कठोच ने इसे दुष्यंत पुत्र भरत से जोड़ा है.[१३]

५ **राम लक्ष्मण सीता मंदिर तथा हनुमान मंदिर की द्वार भूषा** :- ये दोनों मंदिर मुख्य मंदिर के बाएं पार्श्व मे है, अवश्य ही हनुमान मंदिर पश्चिमाभिमुख तथा राम सीता लक्ष्मण मंदिर दक्षिणाभिमुख है किन्तु इन दोनों देवालयों की द्वार भूषा में अत्यधिक समानता देखने को मिलती है,दोनों प्रवेश द्वारों की माप ३५ * ७० सेमी है, जिनमे त्रिशाखा युक्त पार्श्व स्तंभ है,दोनों मंदिरों की द्वार भूषा को एक दृष्टि में निम्न प्रकार से समझा जा सकता है.

राम सीता लक्ष्मण मंदिर	**हनुमान मंदिर**
उत्तरांग पर नव ग्रहों का अंकन (देखे चित्र संख्या १० ल)	उत्तरांग पर नव ग्रहों का अंकन (देखे चित्र संख्या १० र)
ललाट बिम्ब पर लकुलीश	ललाट बिम्ब पर लकुलीश
त्रिशाखा द्वार,२ सादी शाखा तथा एक पर नृत्यरत तथा वादक गन्धर्वो का अंकन (देखे चित्र संख्या ९)	त्रिशाखा द्वार,२ सादी शाखा पर केवल नृत्यरत गंधर्व
पैद्य भाग शैव व वैष्णव द्वारपाल तथा अंजलीहस्त मुद्रा में उपासक/उपासिका	पैद्य भाग शैव व वैष्णव द्वारपाल तथा कलशधारिणी गंगा और यमुना
उदम्बुर ओर २ ग्रास मुख सहित कुबेर अथवा अन्य दिग्पालों का अंकन (देखे चित्र संख्या११ ल)	उदम्बुर ओर २ ग्रास मुख सहित कुबेर अथवा अन्य दिग्पालों का अंकन (देखे चित्र संख्या ११ र)
द्वार के निचले भाग पर शंख युक्त चंद्रशिला	द्वार के निचले भाग पर शंख युक्त चंद्रशिला

चित्र संख्या ९- आदिबदरी मंदिर समूह में अंकित राम सीता लक्ष्मण मंदिर की द्वार भूषा

६ **सत्यनारायण तथा लक्ष्मी नारायण मन्दिर की द्वार भूषा:-** आदिबदरी मंदिर समूह के अन्य बड़े मंदिरों की द्वार भूषा की अपेक्षा इन दोनों पश्चिमाभिमुख मंदिरों के अलंकरण के विषय में उपेक्षित प्रतीत होते है, इन दोनों मंदिर के द्वार वेसे तो त्रिशाखा परम्परा के है, किंतु उनमे किसी भी प्रकार का कोई अलंकरण नहीं किया गया है, द्वार के ललाट बिम्ब पर गणेश का साधारण अंकन किया गया है.(देखे चित्र १०द १० य) द्वार के उदुम्बर में भी २-२ ग्रास मुखों के साथ दोनों ओर युगल युग्मों का सामान्य अंकन मिलता है. (देखे चित्र११ द १०य) इसी तरह पश्चिमाभिमुख शिव मंदिर भी मिलता है, तथा ललाट बिंदु पर बनी आकृति की पहचान करना भी जटिल है,किन्तु अन्य मंदिरों की भांति संभवतः इस पर भी गणेश का अंकन रहा होगा.

चित्र संख्या १०- आदिबदरी मंदिर समूह के सभी आठ मंदिरों के अंलकृत उत्तरांग

(अ)- विष्णु मंदिर का उत्तरांग
(ब)-गणेश मंदिर का उत्तरांग
(स)-गोरीशंकर मंदिर का उत्तरांग
(द)-लक्ष्मीनारायण मंदिर का उत्तरांग
(य)-सत्यनारायण मंदिर का उत्तरांग
(र)- हनुमान मंदिर का उत्तरांग
(ल)- राम सीता लक्ष्मण मंदिर का उत्तरांग
(व)-महिषमर्दनी मंदिर का उत्तरांग

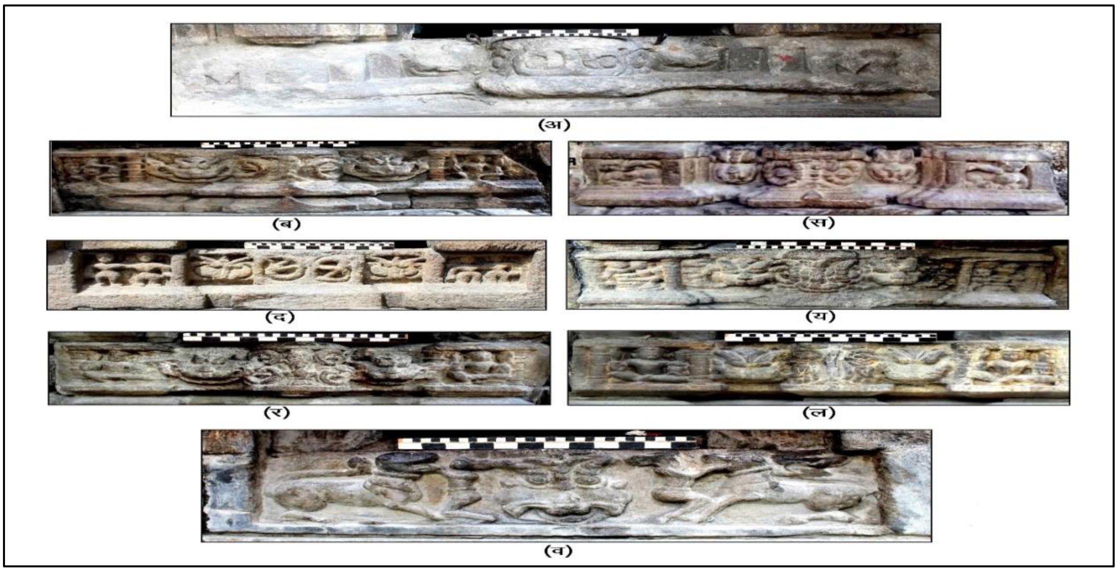

चित्र संख्या ११- आदिबदरी मंदिर समूह के सभी आठ मंदिरों के अंलकृत उदुम्बर.

(अ)- विष्णु मंदिर का उदुम्बर
(ब)- गणेश मंदिर का उदुम्बर
(स)- गोरीशंकर मंदिर का उदुम्बर
(द)- लक्ष्मीनारायण मंदिर का उदुम्बर
(य)- सत्यनारायण मंदिर का उदुम्बर
(र)- हनुमान मंदिर का उदुम्बर
(ल)- राम सीता लक्ष्मण मंदिर का उदुम्बर
(व)- महिषमर्दनी मंदिर का उदुम्बर

उपरोक्त सभी मंदिर आदिबदरी मंदिर समूह में बड़े मंदिर है,इनके अलावा कुबेर, अन्नपूर्णा, गरुड़, जानकी तथा चक्रभान मंदिर छोटे आकर में है, इनमें से कुबेर का मंदिर भग्नावस्था में है. तथा अन्य मंदिर अपेक्षाकृत सुरक्षित है. कुबेर, अन्नपूर्णा तथा जानकी मंदिर दक्षिणाभिमुख है, एवं गरुड़ व चक्रभान मंदिर पूर्वाभिमुख है, चक्रभान मंदिर में वर्तमान में सूर्य मूर्ति है, इसलिए इसे सूर्य मंदिर भी कहा जाता है. इन सभी छोटे मंदिरों में केवल

अन्नपूर्णा मंदिर में ही द्वार के ललाट बिम्ब पर गणेश के अंकन पहचानने योग्य है. अन्य मंदिरों के द्वार सादे है, द्वार भूषा में ललाट बिम्ब पर गणेश के अंकन के सन्दर्भ में यहाँ पर उल्लेख करना प्रयोजनीय होगा की प्रासाद मंडन के अनुसार किसी सम्प्रदाय के मंदिर के द्वारोतरांग में गणेश की मूर्ति उत्कीर्ण की जा सकती है.[१४]

पलेठी मंदिर समूह व आदिबदरी मंदिर समूह के देवालयों की द्वारभूषा की पारस्परिक तुलना :- अवश्य ही भौगोलिक दृष्टि से उपरोक्त दोनों देवालय समूह एक दुसरे से बहुत दूरी पर स्थित है, किन्तु दोनों समूहों के देवालयों की भूषा में प्राचीन शिल्प शास्त्रों व अन्य ग्रंथो में उल्लिखित नियमों का सर्वथा पालन किया गया है, दोनों देवालय द्वारों के आकार तथा उनकी भूषा में अंतर मिलता है, उदाहरणार्थ जहाँ पलेठी मंदिर समूह की द्वार भूषा के लिए प्राकृतिक संपदाओं पुष्प, लता आदि का अधिक प्रयोग किया है, ठीक उसके विपरीत आदिबदरी में प्राकृतिक संपदा की अपेक्षा देवआकृतियों को प्रधानता दी गयी है इसके अलावा यह भी विचारणीय है कि, पलेठी मंदिर समूह के सभी मंदिरों के द्वार पूर्वाभिमुख हैं, किन्तु आदिबदरी समूह मंदिरों के द्वार विभिन्न दिशाओं में हैं. किन्तु यहाँ पर यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि, आदिबदरी के सभी मंदिरों के द्वार निर्धारित नियमानुसार बने है. उदाहरण के लिए परिसर में निर्मित सूर्य मंदिर का द्वार पूर्वाभिमुख है, जैसा की प्राथमिक ग्रंथों में निर्धारित किया गया है. तथा साथ ही पलेठी मंदिर के द्वारों की अपेक्षा आदिबदरी मंदिरों के द्वार कम चौड़ाई और कम ऊंचाई के है, किन्तु इसके बावजूद भी द्वार निर्माण के १:२ के शास्त्रीय परिमाप का सर्वथा पालन किया गया है.

निष्कर्ष :-प्रस्तुत शोध पत्र में लिए गये पलेठी मंदिर समूह तथा आदिबदरी मंदिर समूह में निर्मित विभिन्न देवालयों की द्वार भूषा के अध्ययन के आधार पर निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि, भारत के इस दुर्गम हिमालयी क्षेत्र में भी देवालय वास्तु कला का उसी प्रकार विकास हुआ, जिस प्रकार भारत के अन्य स्थानों पर हुआ अवश्य ही कालक्रम की दृष्टि से इनमें सामान्य अंतर देखा जा सकता है, किन्तु देवालयों के द्वार को भूषित करने लिए विभिन्न प्राकृतिक, ज्यामितिक, देवाकृतियों तथा अनेक अन्य अभिप्रायों के साक्ष्य इस तथ्य को प्रमाणित करते है कि, देववास्तु निर्माण तथा देववास्तु की भूषा (विशेषकर द्वारभूषा) के लिए प्राचीन शिल्प शास्त्रों में जो अभिप्राय, नियम और अवधारणायें निर्धारित की गयी है उनका इस क्षेत्र में भी समुचित पालन एवं प्रयोग हुआ है. जिनमे प्रमुख है- प्रवेश द्वार की माप, त्रिशाखा द्वार का निर्माण, द्वारोतरांग पर नवग्रहों का अंकन, ललाटबिम्ब पर गणेश व अन्य देवताओं का अंकन, द्वार शाखाओं पर पैद्य का निर्माण व उस पर नदी देवताओं और द्वारपालों का अंकन आदि जो की इस भूखण्ड की कला, संस्कृति, इतिहास तथा पुरातत्व की अमूल्य निधि है.

सन्दर्भ सूची

१. एस०पी० गुप्ता,शशिप्रभा अस्थाना; एलिमेन्टऑफ़ इन्डियनआर्ट इन्क्लूडिंग टेमप्ल आर्किटेक्चर आइक्नोग्राफी एंड आइक्नोमिस्ट्री, इन्द्रप्रस्थ म्यूजियम ऑफ़ आर्ट एंड आर्कियोलोजि,नई दिल्ली,२००२, पृष्ठ स० १६

२. यशवंत सिंह कठोच; मध्य हिमालय खण्ड-२ मध्य हिमालय की कला (एक वास्तुशास्त्रीय अध्ययन, बिनसर पब्लिशिंग हाउसदेहरादून,२००३, पृष्ठ स० ९१

३. रुदल प्रसाद यादव; प्राचीन भारतीय कला (वास्तुकला ,मूर्तिकलाएवं चित्रकला) विजय प्रकाशन मंदिर सुडिय,वाराणसी २०००, पृष्ठ स०१५३

४. यशवंत सिंह कठोच; उपरोक्त, पृष्ठ स०९१-९४

५. स्टेला क्रामरिश; दि हिन्दू टेम्पल :भाग -२ ,यूनिवर्सिटी ऑफ़ कलकत्ता :१९४६ पृष्ठ स०३१३

६. कृष्ण देव ; टेम्पल ऑफ़ इंडिया भाग-१, आर्यन बुक इंटर्नेशनल,नई दिल्ली, १९९५ पृष्ठ स० २१३

७. तारीशीण झा,घनश्याम त्रिपाठी ; अग्निपुराण पूर्वभाग(हिंदी अनुवाद सहित),चोखाम्बा संस्कृत भवन, हिन्दी साहित्य सम्मलेन ,प्रयाग , इलाहाबाद,१९८४, पृष्ठ स०-२२५

८. स्टेला क्रामरिश; पूर्वोक्त पृष्ठ स०- ३१५

९. यशवंत सिंह कठोच; पूर्वोक्त पृष्ठ स०- ६४

१०. यशवंत सिंह कठोच; पूर्वोक्त पृष्ठ स०- ६५

११. यशवंत सिंह कठोच; पूर्वोक्त पृष्ठ स०- ६१

१२. आर नाथ ; एलिमेन्टऑफ़ इंडियन आर्ट एंड आर्किटेक्चर दि प्रोग्राम, जयपुर १९८६ पृष्ठ स०६१

१३. यशवंत सिंह कठोच; पूर्वोक्त पृष्ठ स०- ९२

१४. शशिबाला श्रीवास्तव; भारतीय मंदिर एवं देवमूर्तियाँ (ओसिया,खजुराहों तथा उड़ीसा के विशेष वास्तुशास्त्रीय संदर्भ में)प्रथम खण्ड , रामानंद विद्या भवन,दिल्ली,१९८९, पृष्ठ स०२२